

Bhajan

11

हरि ओम तत्सत

हरि ओम तत्सत, हरि ओम तत्सत,
महामंत्र है ये, जपा कर जपा कर ॥

लगी आग लंका में हलचल मची थी,
तो क्यूं कर विभिषण की कुटिया बची थी,
यही मंत्र था उसकी कुटिया पे अंकित,
हरि ओम तत्सत ॥ १ ॥

ये पूछा था इक दिन हिमालय कुमारी,
है वो कौन सा मंत्र कल्याणकारी,
तो बोले महादेव देवों के शंकर,
हरि ओम तत्सत ॥ २ ॥

हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था,
तो विष से वो अमृत कैसे बना था,
दिवानी थी मीरा इसी नाम की थी,
हरि ओम तत्सत ॥ ३ ॥

राम नाम लौ लागी

राम नाम लौ लागी ।
अब मोहे राम नाम लौ लागी ॥

उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,
भक्ति भवानी जागी ॥ १ ॥

मिट गये संशय भव भय भारे,
भ्रान्ति भूल भी भागी ॥ २ ॥

पाप हरण श्री राम चरण का,
मन बन गया अनुरागी ॥ ३ ॥

धुन -- राम राम राम राम जय जय राम
श्री राम श्री राम जय जय राम

चली जा रही है उमर धीरे धीरे

चली जा रही है उमर धीरे धीरे,
पल पल आठों पहर धीरे धीरे ॥ १ ॥

बचपन भी जाए, जवानी भी जाए,
बुढ़ापे का होगा, असर धीरे धीरे ॥ २ ॥

तेरे हाथ-पांव में, दम न रहेगा,
और झुकेगी कमर, धीरे धीरे ॥ ३ ॥

बुराई को अपने, मन से हटाले,
तभी होगा प्रभु का, मिलन धीरे धीरे ॥ ४ ॥

राम नाम के हीरे-मोती

राम नाम के हीरे-मोती, मैं बिखराऊँ गली गली,
कृष्ण नाम के हीरे-मोती, मैं बिखराऊँ गली गली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ॥ १ ॥

माया के दीवानों सुनलो, एक दिन ऐसा आयेगा,
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा,
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगा गली गली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ॥ २ ॥

जिन जिन ने यहां मोती लूटे, वह तो मालामाल हुए,
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर वह कंगाल हुए,
चांदी सोने वालों सुनलो, बात कहूँ मैं खरी खरी,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ॥ ३ ॥

दुनिया को तू कब तक पगले, यूँ अपना कहलाएगा,
ईश्वर को तू भूल गया है, अंत समय पछतायेगा,
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुरझाए कली कली,
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली ॥ ४ ॥

राम सुधा रस पीने वाला

राम सुधा रस पीने वाला रहता हरा भरा,
बेड़ा पार लगा ले भईया, राम राम तू गा ।

अल्हड़ चंचल ज्यों नदिया जल, पवन वेग सा उड़ता मन ।
ऐसी ज्योति जगा ले भईया, छूट जाये भीतर का तम ।
द्वार खोलने को मुक्ति का, मन पे काबू पा ॥१॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

तट बन कर जो रहा किनारे, लहर वही लौटाता है ।
सुख दुःख तो काया का गहना, बनता आता जाता है ।
मरा मरा कहकर भी खुलता, द्वार मुक्ति का ॥२॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

चल हट बुहार मन को अपने, मानव मूल जगाता चल ।
याद करे से दया ही उपजे, प्रेम की ज्योति जगाता चल ।
राम नाम गंगा सा पावन, डुबकी जरा लगा ॥३॥
बेड़ा पार लगा ले भईया . . .

रामा रामा, मेरे रामा

मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं, ये तन किसी का है दिया,
जो भी मेरे पास है, वो धन किसी का है दिया ।

देने वाले ने दिया, जो भी दिया किस शान से,
मेरा है यह कहने वाला, कह उठा अभिमान से,
मैं मेरा यह कहने वाला, मन किसी का है दिया ॥१॥

जो मिला है वो हमेशा, साथ रह सकता नहीं,
कब बिछड़ जाए कोई ये, राज़ कह सकता नहीं,
ज़िन्दगानी का खिला, मधुवन किसी का है दिया ॥२॥

जग की सेवा खोज जिनकी, प्रीति उनसे कीजिए,
ज़िन्दगी का राज़ है ये, जान कर जी लीजिए,
साधना की राह पर, साधन किसी का दिया ॥३॥

राम रमैया गाये जा

राम रमैया गाये जा, राम रमैया गाये जा,
राम सिया के चरणों में, तू अपना ध्यान लगायेजा ।

कितने जन्म लिए तब जाकर, ये मानव का तन पाया,
उलझा रहा मोह माया में, प्रभु का नाम नहीं गाया,
सांसो का अनमोल खज़ाना, यूँ ही नहीं लुटायेजा ॥ १ ॥

करुणा भाव राम जी तुझको, भव सागर से तारेंगे,
जन्म जन्म के पापों से ही, वो ही तुझे उभारेंगे,
दीनों के रखवाले प्रभु की, चरण शरण अपनायेजा ॥ २ ॥

जीवन की पतवारे पगले, दे दे प्रभु के हाथों में,
वही सम्भालेंगे नैया को, दुःखों के झंजालों से,
उनको बना खिवईया, जीवन नैया पार लगायेजा ॥ ३ ॥

जन्म तेरा बातों मे बीत गयो

जन्म तेरा बातों मे बीत गयो, तूने कबहूँ न राम कह्यो ॥

पाँच बरसका भोला-भाला, अब तो बीस भयो,
मकरपच्चीसी माया कारण, देस बिदेस गयो ॥१॥

तीस बरस की अब मति उपजी, लोभ बड़े नित नयो,
माया जोड़ी लाख करोरी, अजहूँ न तृप्त भयो ॥२॥

वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ नित कंठ रह्यो,
संगत कबहूँ न कीनी तूने, व्यर्था में जन्म गयो ॥३॥

ये संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रचयो,
कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यूं भूल गयो ॥४॥